दिनांक :- 22-07-20

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की प्रगति (1900-1931) तक

1920 ई० के दशक में वस्तुओं के मूल्य आसमान छूने लगे। मजदूरों शिल्पियों तथा आम लोगों की कठिनाईयाँ बढ़ गई पीकिंग में मुल्य मजदूरी तथा जीवन स्तर के एक गंभीर अध्ययन ने स्पष्ट किया कि 1900 ई० से विभिन्न खाद्य-पदार्थों तथा वस्त्रों के मूल्यों में वृद्धि हो रही थी 1920 ई० के बाद मूल्यवृद्धि में तेजी आई मजदूरी ताँबे की

की जगह चाँदी के सिक्कों में दी जाने लगी। पीकिंग की तुलना में कैंटोन में मजदूरी देने के पक्ष में न थीं। बाढ़, सूखा, जनसंख्या की वृद्धि इत्यादि के कारण जीवन-स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था। मजदूरों की दशा में सुधार के लिए तीन तरीके अपनाए जा सकते थे। प्रथम, औद्योगिक संघर्षों को बढ़ावा दिया जाए जिनके फलस्वरूप सरकार या नियोक्ता पर दबाव डालकर मजदूरों की दशा में सुधार लाया जा सके। इसके मजदूर संगठनों या संघों का नियंत्रण किया जाए तथा हड़ताल किए जाएँ। 1920 ई० के बाद यह सब शुरू हो गया। द्वितीय वाणिज्य मंडलों की समितियों में मजदूरों को प्रतिनिधित्व दिया जाए। औद्योगिक विवादों के निपटान में मजदूरों का साझेदारी होनी चाहिए। तृतीय, पश्चिमी देशों की तरह

स्वंय सरकार मजदूरो की दशा की सुधार लाने के लिए प्रयास करे। इससे सरकार पर मजदूरो का अनावश्यक दबाव स्वतः दूर हो जाएगा।

चीन मे कुछ उद्योगपति पहले से ही उपर्युक्त वर्णित तीसरी प्रक्रिया पर ध्यान दे रहे थे। चांग चिएन (Chang-Chien) ने अपने कारखाने के निकट एक आदर्श नगर (Model city) का निर्माण किया। शंघाई के व्यवसायिक प्रेस (The commerical press) ने अपने कर्मचारियो को अनेक सुविधाएँ दी थी। इनमे विश्वविद्यालय, अस्पताल महिला कर्मचारियो के गर्भवती होने पर मातृत्व लाभ के रूप मे एक महीने का अतिरिक्त वेतन, कर्मचारियो के लिए आकर्षक विश्रामागार इत्यादि उल्लेखनीय है। 1922 ई० मे यह अपने बड़े कर्मचारियो को पचास प्रतिशत मुनाफा होता है इसके शेयरो की शत-प्रतिशत बिक्री होने लगी। हेनेपिंग निगम (Henye Ping corporation)

भी अपने कर्मचारियो को इसी तरह की सुविधा देता है।
चीन का कपास राजा (Cotton King) वाई. एच. मोह (Y. H. Moh) भी अपने कर्मचारियो के प्रति बड़ा हमदर्द था। यह सब तो ठीक था लेकिन आम तौर पर सभी मजदूरो की दशा मे कोई सुधार नही हुआ यह सब काम पश्चिमी शैली पर सरकार या ऊपर की ओर से किया गया। स्वंय पश्चिमी देशो में ऐसा करके औद्योगिक शांति स्थापित नही की जा सकती है।
चीन या दूसरे देशो में भी नियोक्ताओ ने मजदूरो की दशा में सुधार के लिए कोई प्रयत्न नही किया न तो मजदूरी में वृद्धि ही की गई न कार्यविधि को कम किया गया, न औरतो तथा बच्चो के कारखानो में काम करने से रोका गया। कम मजदूरी के कारण ही शंघाई में हड़तालो का आयोजन किया गया यहाँ तक कि

नेक नियोक्ताओ या उद्योगपतियो ने औरतो - बच्चो से काम लेना बंद नही किया। औरतो तथा बच्चो को कम मजदूरी दी जाती थी। कृषि एंव वाणिज्य मंत्रालय ने इन के लिए कुछ नियम बनाए थे किंतु राजनीतिक स्थिरता के अभाव में इन पर अमल नही किया जा सका।

(ङ) चीन उद्योग में विदेशी सहभागिता के परिणाम

चीन के अनेक उद्योगो पर विदेशी नियंत्रण था। कपास कताई संयंत्रो पर जापान का चालीस प्रतिशत तथा ब्रिटेन का तीन प्रतिशत स्वामित्व था। किंतु सभी उद्योगो के साथ ऐसी बात नही थी। विदेशी नियंत्रण कुछ उद्योगो में अधिक और कुछ में कम था। विदेशियो ने संधिगत सुविधाएँ प्राप्त थी। उद्योगो पर नियंत्रण डालने के लिए श्रेणियो, वाणिज्य मंडल और सरकार थी। अतएव नियंत्रण का क्षेत्र और स्वरूप भिन्न भिन्न था। सरकार श्रेणी प्रथा के तहत संचालित उद्योगो

पर नियंत्रण डालने असमर्थ थी इसी तरह यह विदेश संचालित उद्योगो पर पूर्ण नियंत्रण नही डाल सकती थी। 1925 ई० मे शंघाई बाल श्रमिक आयोग ने इसी तरह की रिपोर्ट दी। चीनीओ का विचार था कि विदेशी सुविधा प्राप्त उद्योगो पर भी सरकार का नियंत्रण होना चाहिए। यह नवीन राष्ट्रवाद की मांग भी थी। किंतु कार्य वधि को कम करने, मजदूरी मे वृद्धि, औरतो बच्चो से काम नही लेने की सामाजिक समस्याएँ ज्यो की त्यो बनी रही।

विदेशी नियंत्रण उद्योगो मे एक समस्या यह भी थी कि वहाँ मजदूर हड़तालो को किसी राष्ट्र विरोधी या प्रजाति विरोधी माना जाता था। जैसे जापानी ब्रिटिश या अमरीका उद्योगो मे जब कभी मजदूरी वृद्धि के प्रश्न पर हड़ताल होती तो इसे जापानी विरोधी ब्रिटिश विरोधी या अमरीकी विरोधी कहा जाता था।

इससे अंतर्राष्ट्रीय संकट पैदा हो जाता था। 1924 ई० में हांगकांग के नाविकों तथा 1925 ई० में शंघाई के जापानी उद्योगों की हड़ताल इसके उदाहरण हैं। राष्ट्र वादी भावना ने इसे और भी उग्र बना दिया।

निष्कर्ष :- यह कहा जा सकता है कि 1900 से 1931 ई० के बीच जो आर्थिक परिवर्तन हुए उनमें आयात निर्यात बाजार का विस्तार तथा इसके स्वरूप में परिवर्तन, कृषि में प्रगति, यातायात के साधनों का विकास कृषि उत्पादन के लिए विस्तृत बाजार आधुनिक मशीन से उत्पादन तथा आर्थिक संगठन में परिवर्तन इत्यादि मुख्य

(2) बौद्धिक प्रगति :- चीन मे राजनीतिक और बौद्धिक क्रांति एक समय हुई। 19वी सदी के अन्तराद्ध में नए विचारो का आगमन शुरू हुआ जिसने 1898 ई० के सुधार आंदोलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

Scanned with CamScanner